

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

1. (i) 'मूलाग्र दाख' - इंग्रज 'मूलाग्र' Date-13/01/2025
इंग्रज अड्डा विवरण: निर्देशा. Boalia

Ans:- 'ସୂକ୍ଷ୍ମ' ଶବ୍ଦ 'ଭାବାର୍ଥ' ଚୂର୍ଣ୍ଣି ସାହା' ଶବ୍ଦ ସାଞ୍ଜିକର ଭାବାର୍ଥ ଚୂର୍ଣ୍ଣି ବିବେଚିତ।

(ii) 'कृत्तुर्भानाः प्रीयमानः' - इत्युत्तर 'कृत्ति' शब्दस्य
कार्त्तुः ? प्रीयमानोऽर्थः किं कार्त्तुः आऽ?

Ans: কুটি: নাম অমৃকর্তক: জাতিলাভ:। যথা
হরায় হ্যাচতে তক্তি: ইত্যত্র ইবিনিক্ষীত:
তক্তি: কর্তা।

अध्यायार्थः अस्त्रदानकाण्डः

3175 1

(iii) सुरक्षा माफि इन्शुरांस पद्धतिकु ।
का नाम कि क्रियाया क्रिया ?

Ans:- ~~पुष्पानि~~ 'पुष्पाणां माति' इति वाक्यार्थः
पुष्पानि जाहर्ष्यं कर्तुं माति' इति । अत्र
क्रियार्थस्य सप्तम्या च कर्मणि 'इति' इति

SUN 07

ଆଜ୍ଞା ~~ସୁଲୋଚନା~~ 'ସୁଲୋଚନା' ଶବ୍ଦଟି ମନ
ଚୁହୁଣୀ ବିଚ୍ଛିନ୍ନ ହେବ ।

- କରମାଂ ଅପି କ୍ରିୟାମାଂ
 - ନିମିତ୍ତଂ ଯା ଅନ୍ୟା କ୍ରିୟା ଅନୁଶ୍ରେୟତ
 ଆ ଅପରା କ୍ରିୟା କ୍ରିୟାର୍ଥୀ କ୍ରିୟା ।
 ଯଥା - ଆହୁତଂ ଯାତି' ଅଥ 'ଯାତି'
 - କ୍ରିୟା କ୍ରିୟାର୍ଥୀ କ୍ରିୟା ।

You change your life by changing your heart. - Max Lucado

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30
31					

(iv) 'पूराणः' इति शब्दः कस्य सूत्रेण का विवेचिः?

Ans: - अत्र 'पूराणः' इति शब्दे 'पूरा' (हरीश्रितः) इति सूत्रेण सम्प्रदानकारकम्। अतः 'पूरा' सम्प्रदाने इति सूत्रेण 'पूरा' विवेचिः।

(v) का नाम विवेचिः? एका नाम योगविवेचिः?

Ans: - विवेचि नाम यावत्कृतविषये कश्चिन्मि-
त्रस्य विकल्पविधानम्। यथा - ज्ञानं हेतु-
अ-क्षीनिष्ठं पक्ष्मी वा मृगः। यथा - काष्ठं
काष्ठं वा वृक्षः।

योगस्य अयोगस्य विवेचि-
विवेचिः एव योगविवेचिः। निर्दिष्टयोग-
समर्थनस्य पारिनीत्युक्त्या कस्यापि अयोग-
प्रत्यक्षकृतस्य योगविवेचिः।

(vi) 'मातुः' निमित्ते कस्य? - अत्र 'मातुः' इति
शब्दे कस्य सूत्रेण का विवेचिः?

Ans: - अत्र 'मातुः' इति शब्दे 'अतु' (अ-
तुनादशनिम्) इति सूत्रेण अतुनाद-
शनिम्। अतः 'अतुनादशनिम्' पक्ष्मी
इति सूत्रेण अतुनादशनिम् पक्ष्मी।

09

APR ■ TUE

Week - 15 ■ (100-266)

April 2024

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

(vii) 'जनिकर्तुः प्रकृतिः' इति सूत्रस्यार्थः रत्नश्रुतिः।
कृद्-रत्नाजिन मञ्जी विद्वत्कृदाश्चर्यं रत्नम्।

Ans:- 'जनिकर्तुः प्रकृतिः' इति सूत्रस्यार्थः
काम्यमानसो मन्त्रोऽस्य हेतुः अपादानं स्यात्।
यथा - व्रजः प्रकाः प्रकाशते।

कृद्-रत्नाजिन मञ्जी विद्वत्कृदाश्चर्यं यथा -
कृद् रत्ना जिन मञ्जी विद्वत् कृदा श्चर्यं रत्नम्। सूर्यस्य उदयः।

(viii) क्वा नाम आध्याता ? तत्र का विवक्तिः ?
Ans:- आध्याता नाम निम्नमपूर्वकविद्वत्प्रकाशं
यथा। तत्र अपादाने पञ्चमी
विवक्तिः।

(ix) किं नाम उपसर्जनम् ? अत्रापि
उपसर्जनसंज्ञा किं किं विवक्तिः ?

Ans:- 'अथमानिर्दिष्टः अत्रापि उपसर्जनम्'।
एकविवक्तिं ~~यथा~~ चापूरनिपातः उपसर्जनम् विवक्तिः।

अत्रापि उपसर्जनसंज्ञा
उपसर्जनस्य पूर्वनिपातः विवक्तिः। एकविवक्तिं -
- विविधस्य उपसर्जनस्य पञ्चनिपातः विवक्तिः।
यथा - अपदिशम्।

(x) आमीप्राथम्यं अवामीत्यत्रापि उदाहरणम्।
'अत्रापि' इत्यस्य कोऽर्थः ?

With self-discipline almost anything is possible. - Theodore Roosevelt

140001

Notes

Appointment

Meeting

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

Ans:- 'अमीनाथ' अवधीकारः यथा - कृष्ण
अमीनाथ इति विश्वस्त उल्लङ्घन इति ।

'अवधुः' नाम ध्वजः । यथा - हिमसा अवधुः
इति अतिहिमम् । इति अवधीकारः ।

(xi) 'द्विजा' इत्युक्ता लौकिकालौकिकविग्रह
विनिर्माणम् ।

Ans:- 'द्विजाः' इत्युक्ता लौकिकविग्रहवाक्यं यथा -
'द्वि' वा 'जा' वा इति । अत्र अलौकिक-
विग्रहवाक्यं यथा - 'द्वि' उ 'वि' इत्युक्ता इति ।

अत्र बहुव्रीहिः समासः ।
(xii) यथाभाक्ति इत्युक्ता लौकिकविग्रहः कः ? नदमिदं
एकं समासेन निष्पद्यते ?

Ans:- यथाभाक्ति इत्युक्ता लौकिकविग्रहः यथा
'भाक्तिम्' अनतिक्रम्य इति ।
नदमिदम् अवधीकारसमासेन निष्पद्यते ।

(xiii) 'द्विगु-समास' उदाहरणं दध्मम् । 'अ
ग्राह्यपुष्पः' इति आभासिकपदं एकं सूत्रेन
निष्पद्यते ?

Ans:- 'द्विगु-समास' उदाहरणं यथा -
उमानां देवनामां अमोहारः इति
विग्रहस्तं द्विगुणम् इति ।

The only true wisdom is in knowing you know nothing. - Socrates

11

APR ■ THU

Week - 15 ■ (102-264)

April 2024

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

'উপমিতঃ শাস্ত্রাদিভিঃ সামান্যলক্ষণম্

'বাস্তবপুরুষঃ' ইতি সামান্যিকপদম্ । ইতিমূলে
উপমিতকর্মধারয়ুঃসামান্যন সিদ্ধান্তি ।

(xiv) 'যক্ষী চানাদবঃ' - ইতুত 'অনাদবঃ' শব্দস্য
লক্ষণম্ ?

Ans:- 'যক্ষী চানাদবঃ' ইতুত 'অনাদবঃ' শব্দস্য
অর্থঃ অনাদবস্য অধিক্যম্ অবস্থা ইতি ।
মত্যা - কদতি কদভা বা প্রাজীতি ।
কদবুঃ পুত্রাদিকম্ অনাদবঃ অংনুপুত্রান ইতুতঃ

(xv) উপমিত-কর্মধারয়ুঃসামান্যস্য উদাহরণমেকং
দেয়ম্ ।

Ans:- উপমিত-কর্মধারয়ুঃসামান্যস্য উদাহরণমেকং
মত্যা - পুরুষঃ বা শাস্ত্রঃ ইব ইতি
বিহত্বেন 'পুরুষবাস্তবঃ' ইতি ।

2. (i) Account for case-ending (কারণ বিবৃতি) ।

(i) অজ্ঞান দীঘাতি ।

Ans:- 'দ্বিঘাঃ কর্ম চ' ইতি সূত্রেণ দিব্ধাত-
প্রত্যয় কর্মকারকম্ । ততঃ 'কর্মনি
দ্বিঘীয়া ইতিসূত্রেণ কর্মকারক দ্বিঘীয়া বিভক্তিঃ ।

(ii) যদুশা চতুর্ভুজঃ ।

Ans:- 'শানিষদাধিক্যমপি অজ্ঞানাং বিকারঃ'
ইতি নিয়মে অত্র অজ্ঞান অজ্ঞাধিক্যঃ ।

When deeds speak, words are nothing. - Pierre-Joseph Proudhon

Notes

Appointment

Meeting

14NON

May 2024						
Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

APR • FRI

Week - 5 (103263)

12

অতঃ পর যেনাশব্দবিকারঃ ইতি
সূত্রেণ অশব্দবিকারার্থে দ্বিতীয়াবিভক্তিঃ।

(iii) সূত্রোক্ত দৃষ্টো হরিঃ।

Ans:- 'হেতু' ইতি সূত্রেণ হেতুর্থো দ্বিতীয়াবিভক্তিঃ।

(iv) যাগায় যাতি। → 'ভূমার্থক ভাববচনাস' ইতি
সূত্রেণ ভূমার্থে বিহিতো অকৃত্যাক্রিয়াক্রিয়া-
বাচকশব্দকাস দ্বিতীয়া বিভক্তিঃ।

(v) অব্রূণ বিহতি। → 'আধাবোধবিকল্পনম্'
ইতি সূত্রেণ অবিকল্পনকারকম্। ততঃ
'অপ্তমৌখিকব্রূণ চ' ইতি সূত্রেণ অবিকল্পন-
কারকে অস্তুমী বিভক্তিঃ।

(vi) সকৃতঃ এর অশব্দ শব্দবচনঃ।

Ans:- 'কর্তৃকর্মণোঃ কৃতি' - ইতি সূত্রেণ কৃত্যযোগে
কর্তরি সন্ধী বিভক্তিঃ।

(vii) অব্রূণ হেতোর্যমতি। → 'সন্ধী হেতুশব্দযোগে'
ইতি সূত্রেণ হেতুশব্দযোগে
হেতু হেতুশব্দযোগে সন্ধী।

(viii) অকৃত্য চাক। → 'অকৃত্যাদিত্য উপসংখ্যানম্' ইতি
(ix) সাক্ষিকেন অকৃত্যশব্দকাস পদং দ্বিতীয়া বিভক্তিঃ।

It is during our darkest moments that we must focus to see the light. Aristotle Onassis

Notes

Appointment

Meeting

MONI